भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVIII अंक–9 15 मई, 2023

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः। ये भजन्ति तुमां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्।

मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय; परन्तु जो भक्त मुझको प्रेम से भजते हैं, वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूँ। **श्रीमद्भगवद्गीता 9/29**

बधाई (चयन/पदोन्नति)

स्थापना अनुभाग–1 से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित संकाय सदस्यों को उनके नाम के आगे दिए गए पद के लिए चयनित/पदोन्नत किया गया है–

संकाय सदस्य का नाम	पिछला पदनाम	नया पदनाम	विभाग/केन्द्र	वेतनमान
प्रो. जितेन्द्र मदान	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	प्रबंध अध्ययन	1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. (सुश्री) सिमोना साहनी	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	मानविकी एवं समाज विज्ञान	1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. केदार भालचन्द्रा खरे	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	ऑप्टिक्स एवं फोटोनिक्स	1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/148283 दिनांक 25.04.2023 के अनुसार **प्रो. शान्तनु कुमार मिश्रा** ने 18.04.2023 से संस्थान के ऑटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलॉजी केन्द्र (कार्ट) में सातवें वेतन आयोग के लेवल–14ए में प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/151136 दिनांक 03.05.2023 के अनुसार **प्रो. सोहेल राणा** ने 28.04.2023 से संस्थान के वस्त्र एवं रेशा प्रौद्योगिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–13ए2 में सह प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/145690 दिनांक 18.04.2023 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) पारुल मेहरोत्रा** ने 03.04.2023 से संस्थान के कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। प्रो. (सुश्री) पारुल मेहरोत्रा को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/145719 दिनांक 18.04.2023 के अनुसार **प्रो. सर्वेश कुमार श्रीवास्तव** ने 28.03.2023 से संस्थान के जैव चिकित्सा इंजीनियरी केन्द्र में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में

कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. सर्वेश कुमार श्रीवास्तव को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/148737 दिनांक 26.04.2023 के अनुसार **प्रो. शालिनी लेमिना वेइखो** ने 24.04.2023 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सह प्रोफेसर (ग्रेड–I) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. शालिनी लेमिना वेइखो को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2023/146918 दिनांक 21.04.2023 के अनुसार **प्रो. गायत्री भरतण** ने 17.04.2023 से संस्थान के ऑप्टिक एवं फोटोनिक्स केन्द्र में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड–II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. गायत्री भरतण को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/148723 दिनांक 26.04.2023 के अनुसार **प्रो. त्सेरिंग नूरबू** ने 24.04.2023 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड–II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. त्सेरिंग नूरबू को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/149261 दिनांक 27.04.2023 के अनुसार **प्रो. सुमित कुमार सिन्हा** ने 24.04.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड–II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. सुमित कुमार सिन्हा को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/145704 दिनांक 18.04.2023 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) केदुमेसे यू. मेक्रिसु** ने 17.04.2023 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2023/143064 दिनांक 10.04.2023 के अनुसार **डॉ. अर्पण गराई** ने 03.04.2023 से संस्थान के अन्तरविद्याशाखायी अनुसंधान स्कूल (SIR) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/146348 दिनांक 19.04.2023 के अनुसार **डॉ. अनुपम दास** ने 19.04.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/147551 दिनांक 02.05.2023 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) निधि शुक्ला** ने 24.04.2023 से संस्थान के भौतिकी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/150203 दिनांक 01.05.2023 के अनुसार **डॉ. मैनाक भट्टाचार्या** ने 1.05.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/146668 दिनांक 20.04.2023 के अनुसार **श्री कुलदीप सिंह यादव** ने 10.04.2023 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/146930 दिनांक 21.04.2023 के अनुसार **डॉ. प्रभात रंजन त्रिपाठी** ने 17.04.2023 से संस्थान के ऑटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलॉजी केन्द्र (कार्ट) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/142376 दिनांक 25.04.2023 के अनुसार **डॉ. शुमनक दीप** ने 25.04.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/152426 दिनांक 09.05.2023 के अनुसार

सुश्री डब्ल्यू. गोल्डलिन प्रियावाथनि ने 03.05.2023 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में अंग्रेजी भाषा अनुदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/144425 दिनांक 13.04.2023 के अनुसार **डॉ. सचिन कुमार गुप्ता,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 13.04.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. सचिन कुमार गुप्ता को 13.04.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/148741 दिनांक 28.04.2023 के अनुसार **डॉ. रंजय शॉ,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (रसायन विज्ञान विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 22.05.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. रंजय शॉ को 22.05.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया जाएगा।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/151895 दिनांक 08.05.2023 के अनुसार **प्रो. देबंजन भौमिक,** सहायक प्रोफेसर (ग्रेड–I) (विद्युत इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 02.01.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. देबंजन भौमिक को 02.01.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/2023/143639 दिनांक 11.04.2023 के अनुसार **श्री नीतिश कुमार,** सहायक (केयरटेकिंग), (छात्रावास संगठन) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 11.04.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः नीतिश कुमार को 11 .04.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।
- कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/2023/146552 दिनांक 20.04.2023 के अनुसार **सुश्री रुचि सनौत्रा,** कनिष्ठ सहायक ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 29.03.2023 से स्वीकार कर लिया है। अतः सुश्री रुचि सनौत्रा को 29.03.2023 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

शैक्षणिक सत्र 2023–24 के लिए एस.ए.सी. (SAC) के चयनित प्रतिनिधि

छात्र कार्य अनुभाग से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/SAS/25/2023/ ISTA-145962 दिनांक 19.4.2023 के अनुसार निम्नलिखित छात्रों को शैक्षणिक सत्र 2023-24 के लिए एस.ए.सी. (SAC) के प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित घोषित किया गया है:–

क. कैम्पस के भीतर शोध छात्रों के प्रतिनिधि (04)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या	छात्रावास
1.	उमंग चतुर्वेदी	2020EEZ8456	सप्तगिरि
2.	सांई किरण कुंतला	2019CEZ8628	गिरनार
3.	सौरभ सिंह	2020AMZ8613	द्रोणगिरी
4.	अभिषेक श्रीवास्तव	2019MEZ8587	ज्वालामुखी

ख. कैम्पस से बाहर शोध छात्रों के प्रतिनिधि (02)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या
1.	विजय प्रभाकर	2022IDZ8153
2.	खंजन ए. जोशी	2020CRZ8690

ग. एम.टेक. कार्यक्रम के प्रतिनिधि (02)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या	छात्रावास
1.	प्राजक्ता देशपाण्डेय	2022CEW2465	सप्तगिरि
2.	महेश अर्जुन गुथे	2020MEE2198	उदयगिरि

घ. पी.जी. कार्यक्रम के प्रतिनिधि (01)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या	छात्रावास
1.	नृपेंद्र सिंह	2022PPM4505	जंस्कार

ड. एम.एससी. कार्यक्रम के प्रतिनिधि (01)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या	छात्रावास
1.	सुमित कुमार नायक	2022PHS7221	विंध्याचल

च. दिवसीय शोध छात्रों (UG/PG) के प्रतिनिधि (01)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या
1.	रिक्त	

छ. एम.आर.एस. के प्रतिनिधि (ए-टाइप क्वाटरर्स) (01)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या	छात्रावास
1.	कपिल तोमर	2019RDZ8595	'ए' टाइप

ज. एस.डब्ल्यू.डी. के प्रतिनिधि (01)

क्र.सं.	प्रत्याशियों का नाम	प्रविष्टि संख्या	छात्रावास
1.	हिमांशु काचरू	2021SRZ8447	जंस्कार

आजादी का अमृतमहोत्सव

आशीर्वाद दीजिए राष्ट्रपिता

महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस के राजनीतिक संबंधों को लेकर बहुत सारी अटकलें हैं, लेकिन व्यक्तिगत रूप से नेताजी उनका सदैव सम्मान करते रहे। पढ़िए छह जुलाई, 1944 का वह ऐतिहासिक भाषण, जब नेताजी ने रंगून रेडियो स्टेशन से गांधी जी को राष्ट्रपिता संबोधित करते हुए उनसे आजाद हिंद फौज के लिए आशीर्वाद मांगा था.....

महात्मा जी,

अब आपका स्वास्थ्य पहले से कुछ बेहतर है और आप फिर से सार्वजनिक काम करने लगे हैं, इसीलिए मैं आपको भारत में रह रहे राष्ट्रभक्त भारतीयों की योजनाओं और गतिविधियों का ब्यौरा देना चाहता हूं। मैं भारत से बाहर रह रहे आपके देशवासियों के विचार आप तक पहुंचाना चाहता हूं और इस बारे में मैं जो कुछ कह रहा हूं वह सत्य और केवल सत्य है। भारत और भारत के बाहर अनेक भारतीय हैं, जो यह मानते हैं कि संघर्ष के ऐतिहासिक तरीके से ही भारत को स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। ये लोग ईमानदारी से यह अनुभव करते हैं कि ब्रिटिश सरकार नैतिक दबावों अथवा अहिंसक प्रतिरोध के समक्ष घुटने कभी नहीं टेंकेगी। भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों की दृष्टि में आप हमारे देश की अंतर्मन जागृति के जनक हैं और वे आपको इस पद के उपयुक्त सम्मान भी देते हैं। 1941 में भारत छोड़ने के बाद मैंने ब्रिटिश प्रभाव से मुक्त जिन देशों का दौरा किया है, उन सभी देशों में आपको सर्वोच्च सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है–पिछली शताब्दी में किसी अन्य भारतीय राजनेता को ऐसा सम्मान कभी नहीं मिला। वस्तुतः आपकी और आपकी उपलब्धियों की सराहना उन देशों की तुलना में, जो स्वयं को स्वतंत्र और जनतंत्र का मित्र कहते हैं, उन देशों में हजार गुना ज्यादा है, जो ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध है।

अगस्त, 1942 में जब आपने भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित करवाया तो भारत से बाहर बसे राष्ट्रभक्त भारतीयों और भारतीय स्वाधीनता के विदेशी मित्रों की निगाह में आपका सम्मान कहीं अधिक बढ़ गया है।

आज ब्रिटेन विश्वयुद्ध जीतने के लिए भारत का आधिकारिक शोषण करना चाहता है। इस महायुद्ध के दौरान ब्रिटेन ने अपने क्षेत्र का एक हिस्सा दुश्मनों को खो दिया है और दूसरे पर उसके दोस्तों ने कब्जा कर लिया है। यदि मित्र राष्ट्र कभी जीत भी गए तो भविष्य में ब्रिटेन नहीं, अमेरिका शीर्ष पर होगा और इसका मतलब यह होगा कि ब्रिटेन अमेरिका का आश्रित देश बन जाएगा। ऐसी स्थिति में ब्रिटेन में अपने वर्तमान नुकसान की भरपाई के लिए पूरी तैयारी हो रही है। यह जानकारी मुझे गोपनीय और विश्वस्त सूत्रों से मिली है और मैं यह अपना कर्तव्य समझता हूं कि आपको इसके बारे में सूचित करूं। देश में या विदेश में, ऐसा कोई भी भारतीय नहीं होगा जिसे प्रसन्नता नहीं होगी–यदि आपके बताए रास्तों से, बिना खून बहाए, भारत को स्वतंत्रता मिल जाए, लेकिन स्थितियों को देखते हुए मेरी यह निश्चित धारणा बन गई है कि यदि हम स्वतंत्रता चाहते हैं तो हमें खून की नदियां पार करनी होंगी। यदि स्थिति हमें भारत के भीतर ही सशस्त्र संघर्ष संगठित करने की सुविधाएं देती तो यह हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग होता, लेकिन महात्मा जी, आप अन्य किसी की अपेक्षा भारत की स्थितियों को शायद बेहतर समझते हैं। जहां तक मेरा संबंध है, भारत में 20 साल तक सार्वजनिक जीवन में रहने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि भारत के बाहर बसे भारतीयों और कुछ विदेशी शक्तियों की मदद के बिना भारत में संघर्ष करना असंभव है।

इस युद्ध से पहले विदेशी शक्तियों की मदद लेना बहुत मुश्किल था और न ही विदेशों में बसे भारतीयों से पर्याप्त मदद ली जा सकती थी, लेकिन युद्ध ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरोधियों से राजनैतिक और सैन्य सहायता प्राप्त करने की संभावना को बढ़ा दिया है, लेकिन उनसे किसी प्रकार की मदद की अपेक्षा करने से पहले मेरे लिए लिए यह जानना जरूरी था कि भारत की स्वतंत्रता की मांग के प्रति उनका दृष्टिकोण क्या है ? यही जानने के लिए मैने भारत छोड़ना जरूरी समझा था, लेकिन यह निर्णय लेने से पहले मेरे लिय यह तय करना भी जरूरी था कि विदेशी मदद लेना सही होगा भी या नहीं। महात्मा जी, मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि महीनों के विचार मंथन के बाद मैने इस मुश्किल रास्ते पर चलना स्वीकार किया था। यदि मुझे इस बात की जरा भी उम्मीद होती कि बाहर से कार्रवाई के बिना हम स्वतंत्रता पा सकते हैं तो इस तरह भारत नहीं छोड़ता। अनेक कठिनाइयों के बावजूद अब तक मेरी सारे योजनाएं सफल हुई हैं। देश से बाहर मेरा पहला काम अपने देशवासियों को संगठित करना था और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि वे सब भारत को स्वतंत्र कराने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। इसके बाद मैने उन सरकारों से संपर्क किया, जो हमारे दुश्मनों के साथ युद्ध कर रही हैं और मैने पाया कि सारे ब्रिटिश प्रचार के विपरीत, धुरी राष्ट्र भारत की स्वाधीनता के समर्थक हैं और वे हमारी मदद करने के लिए तैयार हैं। मैं जानता हूं कि हमारा शत्रु मेरे खिलाफ प्रचार कर रहा है, लेकिन मुझे विश्वास है कि मुझे अच्छी तरह जानने वाले मेरे देशवासी इस कुप्रचार के झांसे में नहीं आएंगे। राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा के लिए मैं जिंदगीभर लड़ता रहा हूं और इसे किसी विदेशी ताकत को सौंपने वाला मैं अंतिम व्यक्ति होऊंगा। दूसरे, मेरे देशवासियों ने मुझे वह सबसे बड़ा सम्मान दिया है, जो किसी भारतीय को मिल सकता है। इसके बाद किसी विदेशी ताकत से कुछ पाने के लिए मुझे रह भी क्या जाता है ?

महात्मा जी, अब मैं अपनी अस्थायी सरकार के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। जापान, जर्मनी और सात अन्य मित्र देश शक्तियों ने आजाद हिंद की अस्थायी सरकार को मान्यता दे दी है और इससे सारी दुनिया में भारतीयों का सम्मान बढ़ा है। इस अस्थायी सरकार का एक ही लक्ष्य है–सशस्त्र संघर्ष करके अंग्रेजों की गुलामी से भारत को मुक्त कराना। एक बार दुश्मनों के भारत छोड़ने और व्यवस्था स्थापित होने के बाद अस्थायी सरकार का काम पूरा हो जाएगा। तब भारत के लोग स्वयं तय करेंगे कि उन्हें कैसी सरकार चाहिए और कौन उस सरकार को चलाएगा।

यदि हमारे देशवासी अपने ही प्रयासों से अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हो जाते हैं अथवा यदि ब्रिटिश सरकार हमारे भारत छोड़ो प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती हैं तो हमसे अधिक प्रसन्नता किसी और को नहीं होगी, लेकिन हम यह मानकर चल रहे हैं कि हम दोनों में से कोई भी संभव नहीं है और सशस्त्र संघर्ष अनिवार्य है। भारत की स्वतंत्रता का आखिरी युद्ध शुरू हो चुका है। आजाद हिंद फौज के सैनिक भारत की भूमि पर बहादुरी से लड़ रहे हैं और इस तरह की कठिनाई के बावजूद धीरे–धीरे किंतु दृढ़ता के साथ। जब तक आखिरी ब्रिटिश भारत से बाहर फेंक नहीं दिया जता है और जब तक नई दिल्ली के वायसराय हाउस पर हमारा तिरंगा शान से नहीं लहराता, यह लड़ाई जारी रहेगी।

हमारे राष्ट्रपिता ! भारत की आजादी की इस पवित्र लड़ाई में हम आपके आशीर्वाद और शुभकामनाओं की कामना कर रहे हैं।

जय हिंद !

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक–23 जनवरी, 2023

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

ई–मेलः sagarprinters@gmail.com